संगीत दर्पण में शिव मुख एवं शिवमत के राग

नमिता कुमारी

रागों की उत्पत्ति 'शिव तथा शक्ति' इन दोनों के योग से हुई है। महादेव जी के पाँच मुखों में से पाँच राग उत्पन्न हुए और छठा राग पार्वती जी के मुख से निकला। महादेव जी ने जब नाट्य (नृत्य) शुरू किया तो उनके 'संद्योवक्त्रा' नामक मुख में से 'श्री राग' निकला। वामदेव मुख से बसंत निकला। अघोर मुख से भैरव, तत् पुरूष मुख से पंचम और ईशान मुख से मेघराग तथा नृत्य के प्रसंग में पार्वती जी के मुख से नट्टनारायण राग उत्पन्न हुआ।

इस प्रकार दामोदर पंडितकृत संगीत दर्पण के द्वितीय अध्याय में राग की परिभाषा, राग के भेद, राग की जाति, 20 राग के अतिरिक्त, राग–रागिनी वर्णन, के अंतर्गत, शिवमत के राग–रागिनियाँ समय, भाषांग–रागांग उपांग, क्रियांग कंडारणा, ऋतु के वर्णन के बाद हनुमन्त की राग–रागनियाँ, रागार्णव मत से राग–रागनियों के बाद हनुमनन्त के छः राग एवं उनकी रागिनियों के लक्षण एवं ध्यान दिए गए है।